# पानी शुद्ध किया पीने को, धो रहे भैंस

**पूर्णिया से केस स्टडी**

**सौर ऊर्जा से शुद्ध पेयजल की आपूर्ति पर करोड़ों खर्च, पर जागरूकता के अभाव में पानी का नहीं हो रहा सदुपयोग**

पूर्णिया के श्रीनगर प्रखंड में पानी शुद्ध करने का लगा सोलर प्लांट.

पूर्णिया के श्रीनगर प्रखंड में टूटी हुई नल में लगा लकड़ी का ठेपी.

विवेक मिश्रा

न जहर खाओ, न माहुर खाओ, मरना हो, तो पूर्णिया जाओ... यह कहावत यों ही नहीं बनी, बल्कि लोकसमाज ने रची है. पूर्णिया जिले के श्रीनगर प्रखंड में घूमते हुए उस माटी से साक्षात्कार हुआ, जिसको देख कर 'परती : परी कथा' लिखी गयी. वाकई एक अद्भुत शांति और प्रकृति की सुंदरता को समेटे हुए है श्रीनगर प्रखंड. इस दौरान लोकसमाज की जहर संबंधी कहावत को भी समझने का मौका मिला. दरअसल पूर्णिया जिले में पेयजल जहर बन चुका है. पानी में इतना ज्यादा आयरन है कि लोगों को कई खतरनाक बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है. जब मामला ज्यादा गंभीर हुआ, तो सरकार भी चेती. लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग ने महादलित और पिछड़े इलाकों को चिह्नित कर सौर ऊर्जा चालित पाइप जलापूर्ति एवं जल शुद्धिकरण संयंत्र स्थापित करने की पहल की है. संयंत्र बिल्कुल सही तरीके से जल शुद्धिकरण कर रहा है. वह उपयोगी है, लेकिन सफल नहीं, क्योंकि जिस आबादी के लिए यह संयंत्र लगाया गया है, उसे इसके लाभ की जानकारी ही नहीं है.

पूर्णिया शहर से 26 किलोमीटर दूर बसा है श्रीनगर प्रखंड. औसत दर्जे की सड़क है, जो प्रखंड के अंदर तक पहुंचाती है. बीच रास्ते बरगद के पेड़ जटाओं को खोले आपका स्वागत भी करेंगे. सुबह साढ़े आठ बजे सौर चालित संयंत्र देखने के लिए बेलदारी टोला होते हुए को-ऑपरेटिव बाजार की ओर बढ़ा. सड़क की दोनों ओर महादलित आबादी है. कतार में बने हुए फूस के मकान हैं. घर के सामने नया सीमेंटेड चबूतरा और उस पर लगा वाटर सप्लाइ वाला नल, आंखों को ताजगी देगा. कुल 1500 मीटर की दूरी में 22 नल लगाये गये हैं. सभी नलों में सौर ऊर्जा संयंत्र से पेयजल शुद्ध होकर सप्लाइ होती है. को-ऑपरेटिव बाजार के निकट श्रीनगर पंचायत पहुंचने पर सौर ऊर्जा संयंत्र देखा. वहां ऑपरेटर संतोष से मुलाकात हुई. एक गिलास पानी भी पिया, शुद्ध पानी था. संयंत्र के बाहर बोर्ड पर जो जानकारी देनी है, उस पर कुछ भी नहीं लिखा गया है. संतोष ने बताया कि इस सौर ऊर्जा संयंत्र की लागत करीब 35 लाख है, जिसे प्रतिभा मेंमब्रेन फिल्टर्स जेवी मुंबई ने तैयार किया है. वहीं सुपरवाइजर हरि नारायण सिंह ने बताया कि संयंत्र में 19 वाट वाले आठ सोलर प्लेट लगाये गये हैं. इस सोलर पैनल से डेढ़ किलो हॉर्स पावर का मोटर चलता है. 2000 लीटर की तीन सीमेंटेड टंकी और 5000 हजार लीटर की टंकी शुद्ध पेयजल से प्रतिदिन भरी जाती है. इस दौरान संयंत्र द्वारा पानी में आयरन की अधिकता को भी कम कर दिया जाता है. पानी संतुलित रूप में टंकी में भरता है. इस प्रक्रिया में एक घंटे लगते हैं. मोटर दिन भर चलता है. सुबह आठ बजे से करीब शाम पांच बजे तक पानी की सप्लाइ होती है.

## सौर ऊर्जा से कैसे शुद्ध होता है पानी

सोलर पैनल मोटर को संचालित करता है. मोटर के जरिये पानी प्यूरीफाइड करनेवाले सिस्टम में जाता है. यहां पानी शुद्ध होता है. आयरन की अधिकता को मशीन पानी से अलग कर देती है. इसके बाद दो सीमेंटेड टंकी और एक प्लास्टिक टंकी में पानी भरा जाता है. यही पानी विभिन्न नलों के जरिये सप्लाइ किया जाता है. पूर्णिया के प्लांट की शुरुआत 2012 में हुई. पीएचइडी विभाग के मुताबिक प्लांट का रखरखाव पांच साल तक संबंधित कंपनी के जिम्मे है. इसके बाद इसे किसी दूसरी जिम्मेवार एजेंसी को सौंपा जायेगा.

सोलर पैनल से पानी को शुद्ध करते कर्मी.

### कहीं टोटी में रस्सी बंधी, कहीं टोटी ही नहीं

बेलदारी टोले में 50 वर्षीय बलदार महतो अपनी झोंपड़ी में बैठे थे. हमारे पहुंचने पर बाहर आये, उनके घर के सामने एक सप्लाइ नल लगाया गया है. यह रस्सी से बंधा था. पूछा कि पानी नहीं आता, तो उन्होंने बताया कि पानी तो आता है, लेकिन टोटी खराब है. इसलिए रस्सी से बांध रखा है. वहीं करीब दस घर और आगे बढ़ने पर गुनसागर महतो मिले. जैसे ही नल के संबंध में पूछा, बिफर पड़े. कहने लगे हमारे घर के सामने लगा दिया है, पूरा पानी घर की तरफ बह जाता है. कीचड़-ही-कीचड़ फैल जाता है, सरकार हटा दे यह नल. इसकी जरूरत नहीं है. वैसे भी नल में टोटी ही नहीं है. लकड़ी की एक ठूंठ टोटी की पाइप में घुसायी गयी थी. टोले में ही एक महिला सरकारी अधिकारी समझ कर शिकायत भी करने लगी कि हमारे घर के सामने टोटी ही नहीं है. जिसको जरूरत है, उसे मिल ही नहीं रहा, जिसकी थोड़ी चलती है, उसी के घर के आगे टोटी लगा दी जाती है. एक नल इसी विवाद में टूट भी गया. विभाग में पूछने पर पता चला कि टोटी को एक निश्चित दूरी पर लगाया गया है. यह सार्वजनिक व्यवस्था है. कोई भी टोले का व्यक्ति इसे इस्तेमाल कर सकता है.

### चोरी हो जाती है टोटी

संयंत्र की देखभाल में लगे संतोष ने बताया कि टोटी अक्सर खराब हो जाती है. फिर लोगों से ही पैसा लेकर इसे लगा दिया जाता है. कई बार टोटी चोरी हो चुकी है. चूंकि टोटी सस्ती है, इसलिए सहयोग से ही लग जाती है.

### संयंत्र के इर्द-गिर्द ही छह नल

पूर्णिया के श्रीनगर प्रखंड में घूमने के दौरान दिखाई दिया कि जिन 22 नलों को 1.5 किलोमीटर में फैलाने का दावा किया गया है. सच्चाई यह है कि संयंत्र के ही इर्द-गिर्द कुल 200 मीटर की दूरी में ही छह नल लगा दिये गये हैं. इनमें भी दो की टोटी खराब थी. बाकी 19 नलों को तीन टोलों में 1.5 किलोमीटर की दूरी में फैलाने का दावा किया गया है, जिन्हें चेक करने पर पता चला कि नल तो हैं लेकिन अधिकतर में टोटी खराब होने की समस्या है. कहीं पानी बहता ही जा रहा है, तो कहीं पानी का इस्तेमाल ही नहीं जानते हैं लोग.

### नल की ऊंचाई, परेशानी का सबब

संयंत्र सही है, सप्लाइ भी है, लेकिन जिसके घर के आगे नल है, उसको परेशानी है. नल जमीन से एक मीटर ऊंचा है. नल को लगाने की इंजीनियरिंग फेल हो गयी है. छोटे बच्चे अक्सर नल से छेड़खानी करते हैं, लिहाजा टोटी खराब होती है या फिजूल में ही पानी बह जाता है.

### शुद्ध पेयजल से कपड़ा धोते हैं...

ग्रामीणों से पूछा कि वे इस नल के पानी का इस्तेमाल करते हैं, तो अधिकतर ने जवाब न में दिया. कई नलों पर लोग कपड़ा धोते हैं, कहीं जानवर. कई लोगों ने कहा कि वे चापाकल का ही पानी पीते हैं, जबकि चापाकल वाले पानी में आयरन की अधिकता है.

### जागरूकता का सिर्फ दावा...

पीएचइडी विभाग लोगों को शुद्ध पेयजल के इस्तेमाल के लिए जागरूक करने का दावा करती है, लेकिन ग्रामीणों से पूछने पर पता चला कि उन्हें इस बात की जानकारी ही नहीं है कि उनके घर जो सप्लाइ लगायी गयी है, उसमें आयरन की संतुलित मात्रा वाला शुद्ध पेयजल उन्हें सप्लाइ किया जा रहा है.

### पिछड़े वर्ग की आबादी को प्राथमिकता

सौर ऊर्जा चालित इस संयंत्र को प्राथमिकता के आधार पर उन जगहों पर लगाना है, जहां पानी में आर्सेनिक, फ्लोराइड, आयरन की अधिकता है. साथ ही यह भी ध्यान देना है कि जहां कम-से-कम 1000 महादलित या पिछड़े वर्गों की आबादी बसती हो.

### निदेशक की बात

ग्रामीण जलापूर्ति के लिए पूरे सूबे में इस संयंत्र को लगाया जाना है. पहला संयंत्र 2009 में लगा था. करीब 500 संयंत्र लगाये जा चुके हैं. संयंत्र लगने का निर्धारण जिले के पदाधिकारी करते हैं. विभाग पंचायत के सहयोग से शुद्ध पेयजल के लिए जागरूकता कार्यक्रम भी चलाता है. बीपी ओझा, डायरेक्टर, वाटर क्वालिटी, पीएचइडी विभाग

**(रिपोर्ट 16 वीं सीएसइ फेलोशिप प्रोग्राम के तहत प्रकाशित)**

सूचना के आवेदन के साथ आम आदमी के लिए दस सूचना शुल्क तय है. यह शुल्क आप नकद भी जमा कर सकते हैं. डाक से आवेदन भेजने की स्थिति में पोस्टल ऑर्डर का इस्तेमाल करें. वैसे बैंकर्स चेक और नन यूडिशियल स्टांप भी लगा सकते हैं. बीपीएल श्रेणी के लिए सूचना शुल्क लागू नहीं है. उसे अपने आवेदन के साथ बीपीएल कार्ड की फोटो स्टेट कॉपी लगानी होती है.